International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 04, No. 04(I), October - December, 2022, pp. 169-174

स्वामी विवेकानन्द के सामाजिक विचारों का वर्तमान शिक्षा के उन्नयन का प्रभाव

डॉ. दीप्ति*

सार

स्वामी विवेकानन्द का जन्म सोमवार, 12 जनवरी, 1863 को सूर्योदय के साथ–साथ प्रातः 6.33 मिनट पर माँ भुवनेश्वरी देवी की कोख से हुआ था। पिता विश्वनाथ दत्त की प्रसन्नता का पारावार न रहा, क्योंकि बहुत दिनों से दत्त दंपती अपने घर के आँगन में पुत्र–प्राप्ति की आशा से देवाधिदेव महादेव भगवान् शंकर से प्रार्थना कर रहे थे। विश्वनाथ दत्त का घर– आँगन किलकारियों से गूँज उठा– नामकरण संस्कार हुआ और बालक का नाम रखा गया 'विश्वेश्वर'। समय के साथ इस नाम में परिवर्तन हुआ, अन्नप्राशन संस्कार केसमय बालक का नाम रखा गया–नरेन्द्रनाथ दत्त। स्वामी विवेकानंद ने सारी उम्र सत्य की खोज की। महाभारत में लिखा है ''सत्य वही है जिससे प्राणियों का कल्याण हो। जो इसके विपरीत वह अधर्म है।'' सत्य क्या है? असत्य क्या है? इसे लेकर प्रश्नों और तर्कों की एक लंबी पगडंडी है जिसके आखिरी छोर पर दर्शन है। एक परम सत्य और मानवता है। विवेकानंद एक शाश्वत सत्य को तलाशते रहे। वह सृष्टि के अस्तित्व को समझना चाहते थे। वह कहते थे सत्य की राह वेदना को कम करने वाली है। सत्य की खोज राजा हरीशचंद्र ने की। गांधीजी ने की। क्या सत्य सबके लिए एक ही होता है। एक कहानी है जो एक शती ई.पू. के बौद्ध ग्रंथ मिलिंद पत्रों में है। कहानी इस प्रकार है– सम्राट अशोक ने एक दिन पाटलीपुत्र के भीड़ के बीच अमात्यों से कहा, "क्या यहां कोई ऐसा व्यक्ति है जो अपने सच के प्रभाव से गंगा की धारा को उलट दे।''

शब्दकोशः *स्वामी विवेकानन्द, सामाजिक दर्शन, मानवतावाद।*

प्रस्तावना

विवेकानंद कहते थे जीवन साधना के लिए बड़े कदम कभी भी ठिठके नहीं। उनके शब्दों से छोटी सी चिंगारी भी धधकती ज्वाला बन जाती थी, जो विचारों पर राख होती थी। वह अपने मधुर शब्दों से भी उड़ा देते थे। वह इस बात को अच्छी तरह जानते थे कि सुधार केवल प्यार देने और उदाहरण बनकर जीने से आता है। अपना ही जीवन ऐसा हो जो जीता जागता प्रशिक्षण केंद्र बन जाए। वह समर शूरमा थे जो हर परिस्थिति को चुनौती देते थे। जीवन साधना की विभूति थे वह। आने वाले समय उनकी बाट जोह रहे थे। असंख्य व्यक्तियों की और युग की पुकार सुनकर उन्होंने जो कदम बाहर बढ़ाए। वह फिर कभी घर की ओर वापिस नहीं लौटे। उनके वज्रवत संकल्प से हालात थर्रा उठे थे।

स्वामी विवेकानंद कर्म के प्रहार से विरोधी परिस्थितियों के सीने दरक जाते थे। स्वामी जी के पुरुषार्थ से देवसंस्कृति विश्व संस्कृति बनी। अपने सुदृढ़ विचारों और विचार क्रांति द्वारा उन्होंने कई नए आयामों को जन्म दिया। उनका संपूर्ण जीवन एक खुली किताब था। नारी सम्मान के प्रति उनकी स्पष्ट अभिव्यक्ति थी। चरित्र निष्ठा के कारण ही वह बंधनमुक्त थे। वह यह अच्छी तरह जानते थे कि करुणा और दया जैसे गुणों का प्रयोग कहां करना चाहिए। मां सीता दया करके रावण पर विपत्ति में फंसी, बिना विवेक कुपात्र पर दया करना दया को ही अपमानित करना है।

---

* सहायक आचार्य, शिक्षक–शिक्षा विभाग, टीका राम कॉलेज ऑफ एजुकेशन, सोनीपत हरियाणा।

स्वामी विवेकानंद ज्ञान की परम ज्योति को हर एक के अंतःकरण में जगाना चाहते थे। सबको प्रकाशित करना चाहते थे। बुद्ध को राजकुमार से भगवान बना देने का श्रेय इसी आंतरिक जागरण को ही दिया जाता है। यही आत्मबोध कर्मयोगी विवेकानंद स्वामी को भी हुआ था।

विवेकानन्द का सामाजिक दर्शन

विवेकानन्द का सामाजिक दर्शन स्वामी विवेकानन्द एक ऐसे मानवतावादी चिन्तक हुये जिन्होंने मनुष्य के रूप में ईश्वर की पहचान तथा मानव प्रेम तथा उपासना के माध्यम से राष्ट्र सेवाका बीड़ा उठाया। वास्तव में उनकी एकता की अवधारणा उनके समूचे सामजवाद तथा मानवतावाद को प्रोत्साहित करती रही और उन्होंने मानव जीवन का आरम्भ समानता के दर्शन में बताया जो वैश्विक एकता की प्राप्ति में जाकर पूर्ण रूप से ग्रहण करना था। वे हर प्रकार के विशेषाधिकार तथा सामाजिक शोषण के खिलाफ थे। उनका मानना था कि समाज में हर प्रकार का शोषण असमानता के कारण ही उत्पन्न होता है। वास्तव में उनकी समानता की विचारधारा ही उनके समूचे आध्यात्मिक दर्शन का आधार है जो व्यक्ति के कृमिक विकास को प्रोत्साहित करती है। परन्तु समाज में असमानता न तो सनातन है और न असीम। उन्होंने व्यक्ति की असमानत के विरुद्ध संघर्ष की अनिवार्यता तथा इच्छा को उचित बताया। उनका मानव अनेकता में विश्वास सांख्य दर्शन के सिद्धांत पर अधारित था। जबकि वेदान्त में उनकी आस्था ने मानव एकता की घोषणा के लिए प्रेरित किया। उनका कहना है कि सामाजिक क्षेत्र में व्यक्ति की स्वतंत्रता समानता पर आधारित होती है। आध्यात्मिक दृष्टि से उन्होंने व्यक्ति की स्वतंत्रता को सबसे अधिक मूल्यवान बताया है। उन्होंने स्वतंत्रता को मानव विकास की अनिवार्य शर्त बताया। यह मनुष्य का सर्वोच्च लक्ष्य है। समाज तथा राज्य को इसमें बाधा डालने का कोई अधिकर नहीं है। उन्होंने आध्यात्मिक स्वतंत्रता का समर्थन करते हुये कहा है कि इसको प्राप्त करने के लिए कर्म उपासना और ज्ञान तीन साधन होते हैं। उन्होंने लिखा है कोई भी मनुष्य और कोई भी राष्ट्र भौतिक समानता के बिना भौतिक स्वतंत्रता प्राप्त करने का प्रयास नहीं कर सकता और न ही मानसिक समानता क बिना मानसिक स्वतंत्रता प्राप्त करने का प्रयास कर सकता है।

वेदों में कहा गया है कि मानव की आत्मा अमर है। शरीर बढ़ने और समाप्त होने के नियमों से बँधा हुआ है। जो पैदा हुआ है या जिसकी वृद्धि होती है, उसका क्षय होना भी निश्चित है। किंतु शरीर में निवास करनेवाली आत्मा अजर एवं सनातन है, वह अनादि है, अनंत है। सच्चा धर्म सदैव भावात्मक है, रचनात्मक है, निषेधात्मक या ध्वंसात्मक नहीं– सच्चे धर्म की कसौटी तो पवित्र पुरूषार्थ से उद्‌बुद्ध आत्मा ही है। ईश्वर का अस्तित्व हम में व्याप्त है। वह हम सभी के अंदर समान रूप से विद्यमान है। स्वामी विवेकानन्द जी का विश्वास था कि सभी धर्मों में सत्य के बीज होते हैं, इसलिए हिंदू समाज सबको वंदन करता है क्योंकि इस संसार में सत्य का कोई भी तिरस्कृत नहीं करता।'' बुकलिन, संयुक्त राज्य अमेरिका की कला दीर्घा (आर्ट गैलरी) में स्वामी विवेकानन्द ने उन्नीसवीं सदी के अंतिम दशक में हिंदू दर्शन और हिंदू धर्म की सनातनता, सार्वभौमिकता और सर्वश्रेष्ठता का दिग्दर्शन उपयुक्त शब्दों में उस समय किया था, जिस समय भारत में अंग्रेजी साम्राज्यवाद अपने पूरे यौवन परथा औरभारत की पद–दलित जनता अंग्रेजों के रहमोकरम पर थी। ऐसे समय युवा सन्यासी विवेकानन्द ने अपनी प्रतिभा से संपूर्ण विश्व पर हिंदू धर्म एवं जीवन–मूल्यों की विजय पताका फहराई थी और हिंदू पुनर्जागरण का महत् कार्य किया था।

स्वामीजी के अनुसार, यदि सारे विश्व का एक अखण्ड रूप से, समष्टि के रूप में चिन्तन किया जाय, तो वही ईश्वर है, और उसे पृथक्–पृथक् रूप से देखने पर वही यह दृश्यमान संसार है–व्यष्टि है। भक्त उस एक सर्वव्यापी पुरुष की साक्षात् उपलब्धि कर लेना चाहता है, जिससे प्रेम करने से वह सारे विश्व से प्रेम कर सके। योगी उस मूलभूत शक्ति को अपने अधिकार में लाना चाहता है, जिसके नियमन से वह इस सम्पूर्ण विश्व का नियमन कर सके। कर्मी प्रकृति तथा मानवता के प्रति निःस्वार्थ भाव से किये गये कर्म के समस्त फलों को समर्पित करना चाहता है ताकि वह अपने क्षुद्र अहंभाव को नष्ट कर सके और समष्टि स्वरूप 'पूर्ण अहं' उसमें प्रकाशित हो सके। इस प्रकार हम देखते हैं कि स्वामीजी की दृष्टि में कर्म, भक्ति, योग और ज्ञानमार्ग एक अद्वैत के लक्ष्य पर ही समन्वित हो जाते हैं। यही योगसमन्वय है।

विवेकानंद ने ज्ञान–मीमांसा पर कोई विशेष ग्रंथ नहीं लिखा। परन्तु इस विषय पर विभिन्न दृष्टिकोण उनके कई लेखों व भाषणों, 'ज्ञान–योग का परिचय', ज्ञानार्जन तथा अन्य, में उनकी ज्ञान–मीमांसक स्थितियाँ अत्यन्त स्पष्ट रूप में व्याख्यायित हुई हैं। वह प्रश्न जिसके साथ किसी भी ज्ञान–मीमांसा का आरंभ होना चाहिए। वह विवेकानंद के अनुसार ज्ञान का प्राथमिक स्रोत है। उन्होंने बतलाया कि यह बहुत कठिन प्रश्न है; मनुष्य कई शताब्दियों से इस पर विचार कर रहा है। जैसे, उपनिषदों में हम पढ़ते हैं कि ब्रह्म–आत्मन् में समस्त ज्ञान की कुंजी है। उसने इस कुंजी को पीढ़ी–दर–पीढ़ी सौंपा, परन्तु व सिर्फ चुने हुए को ही सौंपता है 'वह उसे प्राप्त होता है जिसे वह चुनता है। सिर्फ उसे ही आत्मन् अपने स्वयं के सत्य को प्रकाशित करती है।

स्वामी विवेकानन्द के समय का भारत

आधुनिक युग में स्वामी विवेकानन्द, केवल पूर्व और पश्चिम के मिलन के उत्तम सेतु के रूप में ही नहीं अपितु वह भारत के अतीत और वतममान के भीतर भी सेतु के समान तथा भविष्य के पथ प्रदर्शक थे। ईनकी वाणी थी–

"सांस्कृतिक जीवन में पूर्णता विधान के लिए अपनी प्रकृति के अनुसार ही हमें बढ़ते जाना होगा। पाश्चात्य समाज में प्रचलित कर्मपदधति का अनुसरण हमारे देश में करना व्यर्थ है।" वस्तुतः धर्म शिक्षा, समाज, व्यवस्था, उद्योग, वाणिज्य, संस्कृति आदि सभी क्षेत्रों में इन दिनों भारत पतित और पथभ्रान्त हो गया था। अथवा ऐसा स्वामी विवेकानन्द का समसामयिक भारत लगता था मानो भारतीयों की भारतीयता शीघ्र ही पूरी तरह मिट जाएगी। अंग्रेज़ों ने भारतवर्ष में जैसी शिक्षा प्रणाली की शुरुआत की, वह अंग्रेजों की ही अवश्यकताएं पूरी करने में सहायक होने की विधि से बनाइ गई थी। पाठ्य–पुस्तकों, समाचार–पत्रों एवं धर्म प्रचार के माध्यमों से सरल परिष्कृत भाषा में भारतवांसियों को यह कहा जाता था– भारतवर्ष की अपनी ऐसी कोइ विशेषता नहीं है जिसे आधुनिक विश्व में बचाकर रखना अवश्यक हो। सामाजिक आधार–भारत में जो सामाजिक–धार्मिक परिवर्तन प्रारंभ हुये उसका मुख्य सामाजिक आधार उभरता हुआ मध्य वर्ग एवं परंपरागत साथ ही पाश्चात्य शिक्षा प्राप्त बौद्धिक वर्ग था।उन्नीसवीं शताब्दी के बौद्धिक वर्ग में जो मुख्यतया भारत का मध्य वर्ग था, मानवतावाद एवं विज्ञानवाद के प्रसार से नवीन चेतना आयी। तब उन्होंने पुनर्जागरण एवं धर्म–सुधार जैसी विचारधारा का सहारा लेकर समाज में एक क्रांतिकारी पविर्तन किया।

स्वामी विवेकानन्द जी ने सुधार आंदोलनों को वैचारिक धरातल प्रदान किया उनमें धार्मिक सार्वभौमिकता, मानवतावाद एवं तर्कवाद प्रमुख थे। सामाजिक प्रासंगिकता को तर्कवाद के रूप में मान्यता दी गयी। राजा राममोहन राय ने स्पष्ट किया कि सभी धर्मों में विश्वास, एकता में आस्था, निर्गुण ईश्वर की उपासना एव जाति प्रथा में अविश्वास ही सर्वप्रमुख कारक हैं। सामाजिक–धार्मिक सुधार आंदोलन में सामाजिक सुधारकों का अनेक अवसरों पर धार्मिक अगुवावों से तीव्र टकराव भी हुआ क्योंकि सभी समाज सुधार आंदोलन मुख्यतयाः धार्मिक आडम्बरों एवं कर्मकाण्डों की भर्त्सना करते थे। स्वामी विवेकानन्द के जन्म के समय भारत देश अंग्रेजी साम्राज्य का गुलाम था तथा भारत देश गुलामी की जंजीरों में जकड़ा हुआ था। धर्म के नाम पर अनेक संप्रदायों और पन्थों का प्रचलन हो चुका था।

समाज में अनेक रूढियाँ और कुरीतियाँ अपने चरम पर व्याप्त हो चुकी थीं। स्वामी विवेकानन्द का कहना था यदि तुमने अपनी अध्यात्मिकता का परित्याग करके पश्चिम की भौतिकवादी सभ्यता के पीछे दौड़ना अरम्भ कर दिया तो तीन पीढ़ियों में ही तुम्हारी जाति नष्ट हो जाएगी। राष्ट्र की रीढ़ की हड्डी टूट जाएगी और जिसनींव के उपर राष्ट्रीय भवन का निर्माण किया गया है वह हिल उठेगी और उसका परिणाम होगा सर्वनाश। वस्तुतः शताब्दियों तक विदेशी शासन में पराधीनता का जीवनयापन करते हुए भारतीय समाज नाना प्रकार के अंधविश्वासों, कुरीतियों एवं भ्रष्टाचारों का शिकार हो चुका था। अनादि काल से प्रचलित वैदिक धर्म संस्कृ ति,सभ्यता और परम्पराओं के स्थान पर विभिन्न समप्रदायों में विभाजन, पाश्चात्य संस्कृवत एवं सभ्यता का साम्राज्य स्थापित हो चुका था। स्वामी विवेकानन्द के समय में भारत में अंग्रेजों का शासन का प्रभाव था। अंग्रेजों के शासन के अन्तर्गत कोई भी संस्था स्वतंत्रतापूर्वक कार्य नहीं कर सकती थी। भारत देश में अंग्रेजों के समय में लोकतंत्र नाम की भावना लोगों के मन में नहीं थी तथा भारतीय के मन में भय की भावना व्याप्त थी। भारत देश

में पूर्ण रूप से लोगों के मन में राष्ट्रीयता की भावना का विकास नहीं हुआ था तथा भारत देश में लोगों के मन में राष्ट्र के प्रति एकता की भावना भी नहीं थी। भारतीयों के मन में धर्म के प्रति जो आस्था थी उस धर्म की आस्था को अंग्रेजों द्वारा नष्ट करने का प्रयास किया गया था।

उन्नीसवीं शताब्दी में जब स्वामी विवेकानन्द का 1863 ई0 में जन्म हुआ उस समय देश वैचारिक संक्रमण की विषम स्थिति से गुजर रहा था।एक सदी से चला आ रहा ब्रिटिश शासन जो कि उस समय तक काफी पुराना हो चुका था, भारत की प्राचीन भूमि को तकनीकि और भौतिक रूप से उन्नत पश्चिमी देशों के साथ सम्पर्क में लाने में सहायक था। लेकिन इस सम्पर्क का परिणाम गंभीर सांस्कृतिक भ्रम था। विभिन्न विचारधाराओं को लेकर विवाद अपने पराकाष्ठा पर था। धर्म या विज्ञान? तर्क या विश्वास? आस्तिकता या नास्तिकता ? बहुईश्वरवाद या एकेश्वरवाद? धर्मनिरपेक्षता या आध्यात्मिकता? आर्थिक समृद्धि या तपश्चर्या ? प्राचीनमूल्य या आधुनिक मूल्य? किस रास्ते को छोड़ना है और किसे चुनना है? हैरान–परेशान एवं भ्रमित लोग इन प्रश्नों का उत्तर नहीं जानते थे। इन विवादास्पद विचारधाराओं में से प्रत्येक के समर्थक अपने पसंदीदा मत के समर्थन में समान रूप से आश्चर्यजनक तर्क प्रस्तुत करते थे।

पाश्चात्य वातावरण

स्वामी विवेकानन्द जब शिकागो पहुँचे तो उन्हें इस बात का जरा भी आभास नहीं था कि अपनी मातृभूमि के उत्पीड़ित लोगों, गरीबों का समर्थन करने के कारण विदेशी देश भी उनके आने की प्रतीक्षा कर रहे थे। पाश्चात्य जगत विज्ञान, तकनीकि एवं आर्थिक समृद्धि के क्षेत्र में चमत्कृत कर देनेवाली अपनी उपलब्धियों के मध्य आध्यात्मिक रूप से खोखला हो चुका था। भारत को अपनी आर्थिक समृद्धि के लिए विज्ञान एवं तकनीकि की जरूरत थी तथा पाश्चात्य जगत को खुशहाली एवं शांति के लिए आध्यात्मिक अवलंब (सहारे) की। विज्ञान की क्षेत्र में निरंतर हो रही प्रगति ने लंबे समय से चले आ रहे धार्मिक मतों एवं सिद्धांतों के समक्ष एक गंभीर चुनौती खड़ी कर दी परिणामस्वरूप कुलीन लोगों में धर्म के प्रति विश्वास में कमी आने लगी। ये और भौतिकवादी सभ्यता के अन्य पहेलीनुमा समस्याएँ जिसने की स्वयंको पाश्चात्य जगत में दृढ़तापूर्वक स्थापित कर लिया था, समाधान की माँग कर रही थी। इसको चुनौती के रूप में लेते हुए विवेकानंद ने उपदेश दिया कि 'धर्म मतों या सिद्धांतों में नहीं है' लेकिन 'आध्यात्म को आध्यात्म की तरह महसूस करना' कि 'सभी विज्ञान सिर्फ धर्म के परिवर्तित रूप हैं' तथा कि 'कला, विज्ञान तथा धर्म सत्य कोव्यक्त करने के तीन अलग–अलग रास्ते मात्र हैं'। उन्होंने यह भी देखा कि यदि भारत पुरोहितों (पुजारियों) के अत्याचार से कराह रहा है तो पाश्चात्य जगत सूदखारों के अत्याचार से कराह रहा है। उन्होंने यह महसूस किया कि पाश्चात्य जगत ज्वालामुखी पर बैठा हुआ है और किसी भी क्षण विस्फोट हो सकता है'। उन्हें यह स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा था कि 'प्रजातंत्र', 'अधिकार', 'स्वतंत्रता' तथा 'समानता' जैसे राजनैतिक आदर्श शब्द निरर्थक, आडम्बरी तथा जहरीली गैसों से भरे हुए शब्द हैं और उन्होंने यह दिखाया कि कैसे वेदांत विविध प्रकार, जातियों, संस्कृतियों, धर्मों तथा विचारधाराओं के लोगों के मध्य स्थायी ऐक्य स्थापित करने मे विशाल आधार स्तंभ का काय कर सकती है और सिर्फ वही एक साम्प्रदायिक समाजको स्थायी बना सकता है। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि प्रत्येक व्यक्ति के लिए जो एक आवश्यक अभिवृत्ति है वो यह है कि वो अपने वास्तविक प्रभुत्व को एक दर्शन या सिद्धांत के रूप में नहीं बल्कि एक जीवंत एवं तात्कालिक रूप से प्रासंगिक तथ्य के रूप में स्वीकार करें। यही वो संदेश है जिसकी आवश्यकता थी – विद्वानों और विचारकों ने भी ऐसा ही महसूस किया। भारतीय अभियान विवेकानंद लंबे समय से पीड़ित अपने देशवासियों एवं अपने मातृभूमि के लोगों को भूले नहीं थे। अमेरिका से अपने भारतीय अनुयायियों को लिखे उनके जोशिले पत्र देश एवं देशवासियों के पुनर्निर्माणकी योजनाओं एवं नीतियों से भरे होते थे। 1897 मं भारत वापस आने के बाद उन्होंने जन शिक्षा, गरीबी उन्मूलन हेतु आर्थिक पुननिर्माण तथा समाज के सम्पूर्ण सुधार के लिए एक व्यापक कार्यक्रम बनाया। यह 'समाज सेवा के द्वारा परिवर्तन' की योजना की। उन्होंने 1 मई, 1897 ई0 को भारत पुनर्निर्माण तथा समरसता, शांति एवं समृद्धि, मनुष्यों के समग्र विकास एवं पाश्चात्य जगत के लोगों को आध्यात्मिक अवलंब हेतु सामग्री प्रदान करने के द्विस्तरीय अभियान के संचालन के लिए रामकृष्ण मिशन की स्थापना की।

- **ईश्वरचंद्र विद्यासागरः** प्रसिद्ध विद्वान एवं समाज–सुधारक ईश्वरचंद्र विद्यासागर के व्यक्तित्व में भारतीय एवं पाश्चात्य विचारों का सुंदर समन्वय था। स्वामी विवेकानन्द ऐसे उच्च मूल्यों में विश्वास करते थे जो समाज के प्रति समर्पित तथा गरीबों के लिये उदार हों। सन् 1850 में वे संस्कृत कालेज के प्रधानाचार्य बने। स्वामी जी ने संस्कृत अध्ययन के लिए ब्राह्मणों के एकाधिकार को चुनौती दी तथा गैर–ब्राह्मण जातियों को संस्कृत अध्ययन के लिये प्रोत्साहित किया। स्वामी जी ने संस्कृत शिक्षा के परम्परागत स्वरूप को समाप्त किया तथा संस्कृत कालेज में अंग्रेजी शिक्षा का प्रबंध किया, जिससे कालेज में आधुनिक दृष्टिकोण का प्रसार हो सके। समाज सुधार के क्षेत्रों में ईश्वरचंद्र विद्यासागर का भी योगदान अतुलनीय है।
- **दयानंद सरस्वतीः** यह हिन्दू धर्म का आंदोलन था, जिसका मुख्य उद्देश्य प्राचीन वैदिक धर्म की शुद्ध रूप से पुनः स्थापना करना था। इसके संस्थापक दयानंद सरस्वती (1824–83), दयानंद सरस्वती के बचपन का नाम मूलशंकर था। उनका जन्म गुजरात के एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था। दयानन्द सरस्वती सत्य की तलाश में लगभग पंद्रह वर्षों तक एक स्थान से दूसरे स्थान भटकते रहे। सन् 1875 में उन्होंने मुंबई में आर्य समाज की स्थापना की। बाद में उन्होंने इसका मुख्यालय मुम्बई से लाहौर स्थानांतरित कर दिया। दयानंद के विचार एवं चिंतन का प्रकाशन उनकी प्रसिद्ध पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश में हुआ। दयानंद की परिकल्पना में, जाति रहित एवं वर्ग रहित समाज, राष्ट्रीय, सामाजिक एवं धार्मिक दृष्टि से संयुक्त भारत, विदेशी दासता से मुक्ति एवं सम्पूर्ण राष्ट्र में आर्य धर्म की स्थापना की कल्पना सर्वप्रमुख थी। उन्होंने वेदों को सच्चा एवं सभी धर्मों से हटकर बताया। उन्होंने नारा दिया 'वेदों की ओर लौटो'। वेदों को उन्होंने सर्वश्रेष्ठ बताया।

निष्कर्ष

- 19वीं शताब्दी का पुनर्जागरण ने भारतीय सनातन धर्म के श्रेष्ठ गुणों से अवगत कराया, जिससे भारतीयों में आत्मविश्वास, आत्मसम्मान तथा हिन्दू धर्म और अपने देश पर गर्व करने कीभावना को बढ़ाया।
- स्त्री मुक्ति आन्दोलन के क्षेत्र में महत्वपूर्ण प्रगति हुई। सती प्रथा, बाल कृपा को अवैध घोषित किया जाना, विधवा विवाह को वैध बनाना, लड़कियों के विवाह की आयु सीमा को बढ़ाना आदि महत्वपूर्ण प्रयास किए गए।
- इस प्रकार हम देखते हैं कि हमारे भारत के आध्यात्मिक पिता स्वामी विवेकानन्द का योगदान अतुलनीय हैं, क्योंकि 19वीं शताब्दी में हमारे धर्म और समाज में जैसी विकृति आ गयी थी उसको उखाड़ फेंकने में स्वामी विवेकानन्द जैसे आध्यात्मिक और धार्मिक पुरूष के ही बस की बात थी। ईश्वर ने स्वामी विवेकानन्द के रूप में इस महान धरती पर अवतरित होकर भारतीयों का उद्धार और उत्थान किये।
- उस समय के लोगों में जिन्हें आधुनिक शिक्षा और सनातन धर्म और दर्शन का ज्ञान प्राप्त था। इनमें यह धारणा पनपी की औपनिवेशीकरण का मूल कारण भारतीय सामाजिक ढांचा और संस्कृति में ब्राह्मणों द्वारा थोपी गई कुछ अन्धविश्वास और रूढ़िवाद हैं। इन बुराइयों को दूर करने के उपाय खोजे जाने लगे। जिनमें स्वामी विवेकानन्द का योगदान अतुलनीय हैं।
- जीवन के प्रति सनातन मानवतावाद और विवेकपूर्ण वैज्ञानिक दृष्टिकोण से समाज में समता के सिद्धान्त का उत्थान हुआ।
- पुनर्जागरण लाने में उन कुछ यूरोपीय विद्वानों का भी हाथ था जो भारत की प्राचीन संस्कृति एवं ग्रन्थों का अध्ययन कर उसे श्रेष्ठ बताया।
- स्वामी जी के समय में प्रेस की स्थापना हो जाने से अनेक पत्र–पत्रिकाओं, साहित्य का प्रकाशन हुआ। इनसे भारतीयों के प्रति अंग्रेजों की व्यवहार हीनता, शोषण, क्रूरता का ज्ञान भारतीयों को कराया। फलतः उनमें आत्म सम्मान के सुरक्षा की भावना जागृत हुई। उन्होंने अपने समाज व धर्म की रक्षा हेतु प्रयत्न आरम्भ किए।

- स्वामी विवेकानन्द द्वारा स्थापित रामकृष्ण मिशन मठ ने सनातन हिन्दू धर्म के बहुमूल्य गुण जैसे स्वतन्त्रता, समानता, मानवतावाद, बुद्धिवाद, वैज्ञानिकता जैसे भारतीय दृष्टिकोण शामिल थे और ये आधुनिकता के वाहक रहे हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. Complete Works of Swami Vivekananda, Calcutta, Mayavati Memorial Edition.
2. Complete Works, Vol. 1, 1977
3. Complete Works, Vol. 2, 1979
4. Complete Works, Vol. 3, 1976
5. Complete Works, Vol. 4, 1981
6. Complete Works, Vol. 5, 1983
7. Complete Works, Vol. 6, 1985
8. Complete Works, Vol. 7, 1986
9. Complete Works, Vol. 8, 1987
10. Complete Works, Vol. 9, 1989
11. Swami Vivekananda: The East and the West, Advait Ashram, Calcutta, 1960
12. Lecturers from Colombo to Almora, Ramkrishna Mission Institute of Culture, Gol Park, Kolkata, 1956
13. Published by Advait Ashram, Kolkata
14. Raja Yoga (1988)
15. Bhakti Yoga (1981)
16. Karma Yoga (1981)
17. Jnana Yoga (1998)
18. Sister, Nivedita : The Master as I saw Him, Udbodhan, Kolkata, 1959
19. Sister, Nivedita : The Web of Indian Life, Udbodhan, Kolkata, 1904
20. Sister, Nivedita : The Last of Pous, Udbodhan, Kolkata
21. Sister, Nivedita : Cradle tales on Hinduism, Udbodhan, Kolkata, 1907
22. Sister, Nivedita : An Indian Study of Love and Death, Udbodhan, Kolkata, 1908
23. Sister, Nivedita : Kali the Mother, Kolkata
24. Sister, Nivedita : Studies from an Eastern Home, Udbodhan, Kolkata
25. Vednata Philosophy AN Address Before the Graduate Philosophical Society, Published by Vedanta Society, New York, 1901.
26. देसाई, ए.आर., 'भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि', मैकमिलन, नई दिल्ली, 1996
27. दुबे, श्यामा, 'मानव और संस्कृति', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1960
28. दत्ता, बी.एन., 'स्वामी विवेकानंद', पैट्रियॉट प्रोफेट, नवभारत पब्लिशर्स, कलकत्ता, 1954
29. गाबा, ओ.पी., 'राजनीतिक विचार कोश', नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली, 1995
30. गांधी, मो.क., 'हिन्दू धर्म, नवजीवन प्रकाशन, अहमदाबाद, 1980
31. गीता शंकर भाष्य, 'हिन्दी अनुवाद', गीता प्रेस, गोरखपुर, 1988
32. गेरिक, 'पॉलिटिकल, थ्योरिज ऑफ दि मिडिल एजेस', कैम्ब्रिज, 1900
33. गुप्ता, एम.एल., व शर्मा, डी.डी., 'सामाजिक मानवशास्त्र', साहित्य भवन, आगरा, 1994
34. जगतियानी, जी.एम., 'स्वामी विवेकानंद मैसेज ऑफ मैनलीनेस', विवेकानंद केन्द्र पत्रिका, वॉल्यूम–21, मद्रास, अगस्त, 1992
35. कर्णसिंह, 'भारतीय राष्ट्रीयता का अग्रदूत', ग्रंथ विकास, जयपुर, 1999.

❖◆❖